International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-04-2023, Accepted: 28-04-2023, Published: 13-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 16-18

21वीं सदी की कहानी: संवेदना और स्वरूप

डॉ. रमेश कुमार गोहे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
लगातार बदलते समय के साथ ही मानव सभ्यता भी निरंतर बदल रही है। मानव सभ्यता की संस्कृति, समाज और सामाजिक दायरा बढ़ने के साथ–साथ ही व्यक्ति का सामाजिक चरित्र भी बदला है। उसकी सीमाओं का विस्तार हुआ है, पर साथ ही कई नई संकीर्णताओं ने भी जन्म लिया है। भौगोलिक सीमाओं को लांघते हुए हम विश्वग्राम की परिकल्पनाओं की दुनिया में विचरते हुए, सीमा विवादों में भी उलझे हैं। हम अपने ही देश के अंदर जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग और प्रांतीय भेदभाव, जातीय अस्पृश्यता के भेदभावों से ग्रसित हैं। कोरोना जैसी महामारी में मानवीय मूल्यों की गिरावट और उसका चरित्र सामने आकर खड़ा हो गया है। बढ़ते क्रम में साहित्य की विभिन्न विधाओं में 21वीं सदी का समाज परिलक्षित हुआ है। गद्य की तमाम विधाओं के साथ–साथ ही कहानियों ने भी समाज का चरित्र उकेर कर सामने पेश किया है। इस आलेख का अभिधेयभी 21 वीं सदी का सामाजिक परिदृश्य और इस समय की प्रकाशित कहानियों में समाज का अवलोकन करना है। कहानीकारों के लेखन में संवेदना और स्वरुप की दृष्टि से कहानियों की पड़ताल करते हुए मानव सभ्यता की दशा को देखना है और साथ ही उसकी दिशा तय करना है।

मूल शब्दः हिन्दी कहानी, संवेदना, कोरोना, भारतीय समाज, 21वीं सदी, संस्कृति और समाज

यहां दो दशक के प्रकाशित कहानी संग्रहों की कुछ चयनित श्रेष्ठकहानियों में समय और समाज का अध्ययन करना है। 21वीं सदी के आरंभ में आधार प्रकाशन से वरिष्ठ साहित्यकार एस आर हरनोट की कहानी संग्रह 'दारोश तथा अन्य कहानियां' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह का प्रथम संस्करण 2001 में तथा द्वितीय 2012 में प्रकाशित हुआ। जैसा कि हम 21वीं सदी को उत्तरआधुनिक जीवन शैली, तकनीक, उपकरणों से और भोगवादी संस्कृति के हिसाब से देखते हैं, पर पहाड़ों के जीवन और वहां की सुविधाओं, परंपराओं, संस्कृति और शिक्षा आदि को लेकर एस आर हरनोट की कहानी 'बिल्लियां बतियाती हैं' में एक वृद्ध जीवन की दशा और पहाड़ की जीवनशैली,संस्कृति और जीवन संघर्ष केंद्रित हैं। वैसे एस आर हरनोट के लेखन में पहाड़,वहां की जीवनशैली, वहां के संघर्ष और संस्कृति के साथ ही वहां के विकासवादी सभी क्रियाकलापों की जानकारी भरी पड़ी रहती हैं। नए पाठकों को इनका साहित्य बहुत ही रुचिकर लगता है। वृद्ध जन–जीवन पर यह कहानी उत्तम श्रेणी की कहानी है। जिसमें जीवन का भोगा हुआ यथार्थ, अतीत की स्मृतियां और एकाकी वृद्धावस्था में बिल्ली, भेड़, बकरी और बैल जैसे पालतू पशुओं साथ,उनकी सेवा करने का संघर्ष और इकलौते बेटे का नगर में जाकर नौकरी करने को दिखाया है।

इस संग्रह में वृद्धजन–जीवन पर 'कागभाखा' भी एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें कहानी की मुख्य पात्र एक वृद्धा है और वह पक्षियों की भाषा जानती है "दादी समझाती परदादा गुणी थे ।वे कौवे की बोली जानते थे। बच्चे हैरान हो जाते। कव्वा भी ऐसा बताता है। दादी को छेड़ देते, दादी तू भी समझती है कौवे की बोली? वह मुस्कुरा देती।कहती कुछ नहीं ।"[1]

ठीक इसी कहानी की तरह हरनोट जी की पात्र अम्मा भी साठ साल की हो गई है और बिल्लियों से बातें करती हैं।"दूध दुहने के बाद अम्मा सीधी रसोई में चली आती है। अब बिल्लियों और अम्मा का झगड़ा जमकर होता है। दोनों बिल्लियां घर की स्लीप पर बैठी अम्मा की बाट निहारती है । जैसेही आंगन में अम्मा उतरेगी, वे दोनों आगे–पीछे टांगों के बीच से भागती रहेंगी। अम्मा खूब चिढ़ती हैं । गालियां देती है। पर वह कहां मानने वाली । जानती हैं, पहले दूध उन्हें ही मिलेगा। म्याऊं म्याऊं से सारा घर जगा देती है। अम्मा रसोई में जाते ही पहले उन्हीं के बर्तन में बाल्टी से दूध उड़ेल देती है।"[2]

शरद सिंह का कहानी संग्रह 2009 में प्रकाशित हुआ, जिसका नाम 'छिपी हुई औरत और अन्य कहानियां'रखा गया है। इसमें जैसा कि वर्तमान समय की संस्कृति में लगातार बढ़ रहे आशा–तृष्णा,लोभ–लालच एवं मनुष्य जीवन के नैतिक पक्षों पर उजागर किया गया है।"प्रेम, घृणा, स्वार्थ, चालबाजी, असुरक्षा, वर्ग–विद्वेष इन्हीं चीजों से ही तो घिरा हुआ है। हमारे मध्य वर्ग और निम्न वर्ग का जीवन और इनके घात–प्रतिघात से उत्पन्न होते हैं मानव मन को विचलित कर देने वाले कथा प्रसंग ।"[3]

संग्रह की सभी कहानियां समसामयिक मुद्दों पर लिखी गई हैं। 'छिपी हुई औरत' के साथ ही 'वह बुर्केवाली' तथा 'खाली सीप', 'वह सोलह सपनों वाली' कहानी है । इन कहानियों में स्त्री जीवन की समस्याएं और कहीं ना कहीं स्त्री चरित्र को रेखांकित किया गया है। यहां 'छिपी हुई औरत' कहानी का एक अंश दृष्टव्य है दृ"वह देवी, सुधा की देवी मौसी नहीं, बल्कि देवी मौसी के भीतर छिपी हुई औरत थी। जिसने अपने जीवन भर अपने प्रिय की स्मृतियों को सहेज कर रखा था ।"[4]

एक और एक पेटी में अपने प्रिय की स्मृतियों छिपा कर रखने वाली देवी मौसी प्रियतम की एक तस्वीर को एक चमकदार लाल पेटी में छिपाकर रखती है। "यह मात्र पेटी नहीं अपितु मौसी के जीवन का गोपन कक्ष है !"[5]

वरिष्ठ साहित्यकार काशीनाथ सिंह का कहानी संग्रह 2012 में प्रकाशित हुआ । जिसमें उनकी प्रतिनिधि कहानियां संकलित हैं । जिनके पात्रों के बारे में कहानीकार कहते हैं कि "इन कहानियों के आदमी जिन्हें चरित्र कहा जाता है। अपनी ठेठ देसी जबानों और लहजेमें बोलते–बतियाते हैं और लोग कहते हैं कि मैंने कहानी के ढांचे में कई प्रयोग किए हैं।"[6]

संग्रहकी सभी कहानियों में आधुनिकता एवं उत्तरआधुनिक परिवेश के कई चरित्र गढ़े गए हैं। नैतिक मूल्यों के पतन और नई संस्कृति के निर्मिति की ओर संकेत किये हैं । इस संग्रह की एक लंबी कहानी 'कविता की नई तारीख' में लेखक ने आधुनिक युग में बढ़ते भौतिकवादी दबाव की ओर संकेत किया है। जहां हर छोटा इंसान भी जल्दी से बड़ा इंसान बनना चाहता है। अपनी पहचान

को बड़ी और दिखावटी करने के लिए वह छोटी नौकरी में भी भ्रष्टाचार करके मोटी कमाई करता हुआ अपने जीवन की सुख सुविधाओं को बढ़ाता है।इन्हीं सुख सुविधाओं के आधार पर वह समाज में बड़ा कहलाता है।

वर्ग परिवर्तन पर साढू भाई आपस बात करते हैं दृ कवी जी, माई रेस्पेक्टेड कवी जी। आप सीधे–सीधे यह क्यों नहीं कहते कि मैं इसलिए नहीं समझ सकता कि आप समझा नहीं सकते। आपके पास घिसे–पिटे कुछ पारिवारिक शब्द हैं। आप कहेंगे मेरा वर्ग चरित्र बदल गया है । यही ना? आप डेढ़ हजार पाते हैं और पाई–पाई को दांत से पकड़ते हैं और आपका वर्ग नहीं बदला और हजार रुपए मासिक पाने वाले मुझ गरीब का वर्ग बदल गया?"[7]

2006 में 'संघर्ष' कहानी संग्रह में सुशीला टाकभौरे ने समाज के निम्न तबके के जीवन संघर्ष के आधार पर हमारे समाज का चित्र खींचा है। इनकी कहानियों में पिछड़ी,दलितजातियों के जीवन संघर्ष के चित्र प्रस्तुत हुए हैं।"इस संग्रह की सभी कहानियों के पात्र शारीरिक संघर्ष के साथ वैचारिक और मानसिक संघर्ष से जूझते हैं। संघर्ष कहानी का शंकर, सिलिया कहानी की सिलिया,जन्मदिन कहानी का मुन्ना, बदला कहानी का कल्लू, छौआ मां कहानी की छौआदाई माँ, नई राह खोज कहानी के रामचंद्र, लालचंद, हरिचंद, मुझे जवाब देना है कहानी की प्राध्यापिका शीला, धूप से बड़ा कहानी का सुनील, चुभते देश कहानी की तक्षशिला वाघमारे, संभव असंभव की मनाली और दमदार कहानी की सुमन। सभी पात्र अपने–अपने क्षेत्र में संघर्ष कर रहे है ।"[8]

संघर्ष की कहानी की लगभग सभी कहानियों में निम्न या शूद्र वर्ण की विडंबनाओं का,अस्पृश्यता का वर्णन होने के साथ–साथ ही उनसे उबरने का, सम्मान प्राप्त करने की विकल्पों की खोज,के रूप में शिक्षा को दिखाया गया है।निम्न जाति की सिलिया जातिगत अपमान की विडंबनाओं से ऊपर उठना चाहती है। इसलिए वह खूब पढ़ लिखकर कवयित्री, साहित्यकार बनकर समाज में सम्मान प्राप्त करती है। परवह हिंदू धर्म के अन्दर के जाति आधारित छुआछूत पर कहती है कि दृ "हिंदू धर्म का बोझ ढोते हुए भी, हिंदू नहीं माने गए।"[9]

वास्तव में हिंदू धर्म की जातिगत अस्पृश्यता, भेदभाव की नीति ने ही हिंदू धर्म के अन्दर एकता–अखंडता को कमजोर किया हो,लेकिन साहित्यकार ने इससे मुक्ति की दिशा में अपने सभी पात्रों को संघर्ष करते हुए दिखाया है ।

2014 में प्रकाशित युवा कहानीकार आशुतोष ने 'मरे तो उम्र भर के लिए' में आधुनिक जीवन शैली के विमर्श के कई स्तरों पर, कई चरित्र को खड़ा किया है। जहां 'उम्र 45 बतलाई गई थी'में जातिगत अस्पृश्यता या विडंबना को विषयवस्तु बनाया है,वहीं 'रामबहोरन की अनात्मकथा' में चे.क.कर रहे शोधार्थियों के जीवन संघर्ष रोजगार प्राप्ति की आशा–निराशा के बीच ढलती उम्र और उस उम्र की तमाम चिंताओं से ग्रसित एक युवक का चरित्र खड़ा किया है। जो अपनी उम्र और समय दोनों को काट रहा है। अपने मित्र के इस प्रश्न पर वह जो उत्तर देता है, वह अजीब परिस्थितियों की विडंबना को दर्शाता है कि इस शैक्षिकबेरोजगारी और उससे निकलने वाली दूरूचिंताओं में वह भूल गया है कि वह कट रहा है या उसका समय कट रहा है।"कहो डॉक्टर कैसी कट रही है? तो रामबहोरन प्रतिप्रश्न करते हैं – कौन आदमी या समय? सवाल करने वाला शायद अपना जवाब पा जाता और रामबहोरन अपने रस्ते हो लेते।"[10]

इस संग्रह में वृद्ध जन विमर्श की कहानियां भी हैं 'दादी का कमरा' और 'पिता का नाच' ऐसे ही कहानियां हैं। वर्णवादी व्यवस्था में हिंदू धर्म की विविध जातिगत अस्पृश्यता और जातीय दंभ पर आशुतोष सबसे अलग ढंग से सोचते हैं। उनकी कथा में समाज के दलित पात्रों के अंदर भी एक श्रेष्ठता बोध दिखाई देता है। जो अपनी वर्तमान विडंबना से उबरने की कोशिश में श्रेष्ठजाति के लोगों को अपनी औकात दिखाते हैं।

'उम्र 45 बतलाई गई थी' का पात्र वाल्मिकी इसी तरह का पात्र है।"जब कभी वह मस्ती में आता तो स्कूल के बच्चों को चिढ़ाता था कि तोहार बप्पा मांईजवन रामायण पढ़त हैं उ हमरे लिखल है। वाल्मीकि कीइसी बात पर बच्चों को तो कभी–कभी राम और रामायण से भी बदबू आने लगती थी।"[11]

समाज में अस्पृश्यता की विडंबना, गंदगी औरखराब चीजों से नहीं, बल्कि जाति से ही इन सभी कहानियों में कहीं न कहीं आशुतोष इस तरह के कई विमर्श खड़े करते दिखाई देते हैं।

आधुनिकता के कमजोर पड़ने और उत्तरआधुनिक जीवन परिवेश का हमारी संस्कृति में प्रवेश, कई सारी नीतियों, नैतिकताओं को ख़त्मकरते हुए समाज में एक नई संस्कृति गढ़ता हुआ प्रतीत होता है। पर दरअसल यह बाजारवाद का समय है। समाज का बाजार और भ्रष्टाचार के मुट्ठी में कसते जाने का और अपनी मुक्ति के लिए छटपटाती आत्मा की तरह तड़पने का समय है।

कथाकार देवेंद्र का कहानी संग्रह इन्हीं विडंबनाओं पर प्रकाशित है। जिसका शीर्षक ही 'समय बे समय' है। इस संग्रह में छह कहानियां हैं । जिनमें 'रंगमंच पर थोडा रूक कर' 'एक खाली दिन' 'एक खंडित प्रेमकथा' 'समय बे–समय''सपने के भीतर' और 'नालंदा पर गिद्ध' हैं।

'नालंदा पर गिद्ध' एक ऐसी कहानी है जिसमें शैक्षिक जगत के भ्रष्टाचार को उजागर करते हुए कई श्रेष्ठ माने जाने वाले से चरित्रों को निर्वस्त्र कर उनका उनका असली रूप दिखाया है। कानून का भ्रष्टाचार और लेट–लतीफी पर तंज कसा है । हत्या जैसा अपराध करवाने के लिए पेशेवर हत्यारे तैयार करवाए जा रहे हैं ।दुश्मन को मारने के लिए पेशेवर हत्यारों को निर्मित करने वाले लोग कौन हैं? इस समाज के चरित्र के कई चित्र यहाँ देखने को मिलते हैं और पेशेवर हत्यारे एक आम आदमी का जीवन जीना सीख जाते हैं। जैसे उसने कुछ किया ही नहीं है। वह तो अपना एक रोजगार कर रहा है। जैसे कोई सब्जी बेचता है।बेरोजगार विश्वंभर जो प्रोफ़ेसर बनने की तैयारी कर रहा है । उससे पूछता है–"तुम्हें एक आदमी की हत्या के लिए कितने पैसे मिल जाते हैं?"[12]

तब वह बड़ी ही बेबाकी हंसी हंसता हुआ आसानी से जवाब देता है। "यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस आदमी के लिए और किस आदमी की हत्या कर रहे हैं।" [13]

2022 में ही प्रकाशित पंकज सुबीर का कहानी संग्रह'महुआ घटवारिन और अन्य कहानियां' जिसमें फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'तीसरी कसम' की महुआ घटवारिन की कथा को पूरा लिखने का सार्थक प्रयास लगता है। कथा तीसरी कसम कहानी के पाठक को सीधे कनेक्टकर लेती है। अन्य कहानियों में कई तरह के संघर्ष हैं। जिनमें उनके पात्र सफल जीवन की लालसा लिए अनेक आत्मसंघर्षों से भी ग्रसित हैं। "उनकी चिंताओं का फलक व्यापक है जो किसानों की आत्महत्याओं से लेकर नफीसा, अजीजफारुकी और ब्रह्मस्वरुप शर्मा जैसे चरित्रों की उलझनों तक जाता है । उनकी किस्सागोई कदम–कदम पर रंग बदलती है।"[14]

किसान संस्कृति और गवईं जीवन के हिस्से पर लिखी 'चौथमल मास्साब और पूस की रात' एक नए समय की कहानी है जो कथाकार प्रेमचंद की कहानी'पूस की रात' से बिल्कुल अलग पृष्ठभूमिकी कहानी है। इस पूस की रात में जहां दों शरीरों के मिलने की नियति बनती–बिगड़ती हुई भोर का उजाला हो जाता है और एक साफ चरित्र वाला मास्साब की छवि ठीक साफ़ बच जाती है। मास्साब की इच्छा रहते हुए भी वह संयोग नहीं बन सका, जिसे दिन के उजाले में दुर्योग और चरित्रहीनता से जोड़ा जा सकता था । कथाकार के ऐसे लेखन पर गवईं और किसान संस्कृति पर फीचर फिल्म भी बनाई जा सकती है। यह एक

लेखकीयउच्चादर्श ही है कि वह दुर्योग की नियति को बचा लेता है और उसके साथ ही अपने पात्रों का चरित्र भी बचा लेता है।किंतु सांसारिक जीवन की तमाम शारीरिक, मानसिक,द्वंद्व और पीड़ा की यात्रा से गुजारता हुआ पाठक को अपने आत्म संघर्षों के साथ साथ ही अपनी अंतिम आनंद की अवस्था तक भी ले जाता है।

"कुठरिया के दरवाजे पर पहुंचकर मास्साब ने एक बार पलटकर रामचंदर के घर की तरफ देखा कि हो सकता है अब भी कविता पाठ का आमंत्रण मिल जाए।"[15]

21 वीं सदी की कहानियां में समाज के विभिन्न वर्गों का चरित्र और उनके संघर्षों की ही कहानियां हैं और इसके साथ ही उत्तरआधुनिकता की दौड़, भोग विलासऔर भोग लिप्सा की मनोवृत्ति में फंसा मनुष्य एक ओर कर्जदार होकर किस्तों में जीवन जीने पर मजबूर है। बेरोजगारी एक स्थाई माहमारी की तरह फैलकर संक्रामक हो गई है और इन्हीं दूरूचिंताओं के बीच 21वीं सदी के दूसरे दशक के अंत और तीसरे दशक की शुरुआत में कोरोना जैसी महामारी ने इंसान के चित्र को और उघाड़ कर सामने रख दिया। 21 वीं सदी की तमाम कहानियों की विषयवस्तु और पृष्ठभूमि इन्हीं मनोव्यथाओं औरसंघर्षों की जमीन पर निर्मित होती दिखाई देती है।

संदर्भ सूची

1. दारोश तथा अन्य कहानियां एस आर हरनोट, आधार प्रकाशन हरियाणा, संस्करण 2012, पृष्ठ क्रमांक – 54
2. वही पृष्ठ क्रमांक –11
3. छिपी हुई औरत और अन्य कहानियाँ, डॉ. शरद सिंह, वाणी प्रकाशन,संस्करण 2014, कवर पृष्ठ से
4. वही पृष्ठ क्रमांक –60
5. वही पृष्ठ क्रमांक –56
6. प्रतिनिधि कहानियां, काशीनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन दिल्ली,संस्करण 2012, निवेदन से
7. वही पृष्ठ क्रमांक –139
8. संघर्ष, सुशीला टाकभौरे,ज्योतिलोक प्रकाशन,दिल्ली,संस्करण 2012, मनोगत से
9. वही पृष्ठ क्रमांक – 53
10. मरे तोउम्रभर के लिए, आशुतोष, भारतीय ज्ञान पीठ, संस्करण 2014, पृष्ठ क्रमांक9
11. वही पृष्ठ क्रमांक 57
12. समय बे–समय, देवेन्द्र, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण 2016, पृष्ठ क्रमांक 67
13. वहीपृष्ठ क्रमांक 67
14. महुआ घटवारिन और अन्य कहानियां, पंकज सुबीर, सामयिक प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2018,कवर प्रेस से
15. वही पृष्ठ क्रमांक 46